① Dr. Tapati Mukherjee
H.O.D in Music
Associate Prof
R.M. College
Sasaram.

राग - जौनपुरी · Paper 1st B.A Part IInd Music Theory + Pra

"कोमल गमधनि तीव्र रिखब
चढ़त गंधार न होई।
धग वादी संवादि है
जौनपुरी कहि लोई॥"

राग जौनपुरी की उत्पत्ति आसावरी थाट से माना गया है। इसके आरोह मे गांधार स्वर वर्जित है तथा अवरोह मे सातों स्वरों का प्रयोग किया जाता है जिसके कारण इस राग की जाति षाड़व-सम्पूर्ण है, वादी स्वर धैवत तथा सम्वादी स्वर गान्धार है। राग का गायन या वादन समय दिन का द्वितीय प्रहर माना जाता है, इस राग का चलन या स्वरूप राग "आसावरी" से मिलता है।

विशेषता -

① कुछ संगीत विद्वानों का कहना है कि, जौनपुर के "सुल्तान हुसैन ~~शर्की~~ शर्की" ने इस राग की रचना किये थे जिसके कारण इसे जौनपुरी कहा गया।

② इस राग को गाते-बजाते समय राग आसावरी से बचाने के लिए रे-म-प स्वर समूह का प्रयोग बार-बार किया जाता है।

③ यह उत्तरांग वादी राग है। जिसके कारण इसको चलन ज्यादा सप्तक के तार और उत्तरांग मे होता है।

④ इसके प-ग स्वर समूह को बार-बार गाया जाता है जैसे मपधुऽमपगुऽरेम प।

(2)

कोमल स्वर ("षड्ज") सा और (पंचम) प
समप्रकृतिराग – आसावरी

आरोह – सा रे म प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प म ग रे सा
पकड़ – म प नि ध प, म प ग ऽ रे म प

आलाप – सा ऽऽऽ नि ऽऽऽ ध ऽऽ सा, रे म ऽ प ऽऽ म प ग ऽऽ
रे म प ऽ ग ऽ रे सा, रे ऽ म प ध म प ध ऽ नि ध प,
म प ध ऽ नि ऽ सां। रें सां, रें में गं रें सा, नि ऽ ध ऽऽ प, म प ध नि
ध प, म प नि ध प, ऽऽ रे म प, ऽ ग ऽ रे सा, रे म प।

ताल आड़ा .... 8 मात्रा [illegible]

8 (1) म प ध म ध प म प | ग ऽ रे सा रे म प ऽ

(2) म प नि नि ध प म प ध प म प म ग रे सा

आड़ा .... अगला

16 (3) म प ध म ध प म प | ध प म प ध नि ध प
म प म ग रे सा म प | म ग रे सा रे म प ऽ

(4) ग ग रे सा रे म ध ऽ | नि नि ध प म प ध नि
सां सां नि ध प ध नि सां | नि ध प म रे म प ऽ

Scanned with CamScanner

③ अन्तरा को तान

तू है — — — — कलंक

[illegible] ① सांऽ धनि पध मप | धप मप धनि सांऽ

② निसां धनि सांऽ पध | मप धऽ गम पध

③ गंगं रेंसां रेंरें सांनि | सांसां निध निध पध
मप धप धनि सांऽ | धनि सांऽ धनि सांऽ

④ धनि धसां निसां धनि | पध पनि धप मप
धप मप मग रेग | पऽ रेग पऽ रेग

⑤ निनि सांसां निसांसांनि सांरें निसां धप निनि
धनि निध निनि धनि धप मप धनि सांऽ

Scanned with CamScanner